(अ) मूल्य सम्बन्धी भारतीय अवधारणा
(Indian Conception of Values)

भारतीय मनीषियों ने मानवोचित जीवन लक्ष्यों को ही मूल्य (Value) की संज्ञा दी है। जीवन मूल्यों के लिए "पुरुषार्थ" शब्द का प्रयोग किया है चार पुरुषार्थ निम्न है —

(i) अर्थ
(ii) धर्म
(iii) काम
(iv) मोक्ष

मोक्ष मानव जीवन का अन्तिम लक्ष्य है जो परिपूर्णता की स्थिति है।

(ब) मूल्य सम्बन्धी पाश्चात्य अवधारणा —
(Western Conception of Values) -

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार " मूल्य वह है, जिसका महत्व है जिसके पाने के लिए व्यक्ति बलिदान/चेष्टा करता है। अर्बन के अनुसार निम्न मूल्य है ——

Scanned with CamScanner

मूल्य

शारीरिक आर्थिक मनोरंजन सौन्दर्य नैतिक सौन्दर्य बौद्धिक धार्मिक

आदर्श वादियों के अनुसार मूल्य शाश्वत व निरपेक्ष (Absolute) होते हैं। सत्यम, शिवम, सुन्दरम् ये तीनों मूल्य व्यक्ति की आध्यात्मिक गति विधियों - ज्ञानात्मक, क्रियात्मक एवं भावात्मक से सम्बन्धित हैं।

परम्पराएँ (Traditions)

सामाजिक प्राणी होने के परिणामस्वरूप व्यक्ति को जो कुछ समाज से मिलता है उसे 'सामाजिक विरासत' कहते हैं। यह विरासत भोजन, पहनावा, ज्ञान-विज्ञान, नियम-कानून, रीति-रिवाज, प्रथा, आदत आदि है।

सामाजिक विरासत के अन्तर्गत भौतिक तथा अभौतिक दोनों प्रकार के चीजें होती हैं। परम्परा सामाजिक विरासत का अभौतिक अंग है। परम्परा हमारे व्यवहार के तरीकों का द्योतक है

Scanned with CamScanner

Date ______
Page ______

जिम्स वर्ग के शब्दो मे — परम्परा का अर्थ उन सभी विचारो और प्रथाओ का योग है जो व्यक्तियों के एक समुदाय का होता है और एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांरित होता रहता है।

2.) राष्ट्रीय विचारधाराएँ एवं शैक्षिक दृष्टि —

National Idealogies and Educational Vision

शिक्षा का सीधा सम्बन्ध समाज मे रहने वाले व्यक्तियो से होता है। लोगो ने उदात्त प्रकृति एवं सार्वभौमिक मूल्यो से युक्त आदर्श जीवन के ढंग पर महत्व दिया है।

राष्ट्रीय विचारधाराओं का राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था तथा पाठ्यचर्या पर क्या प्रभाव पड़ता है इसका संक्षिप्त उल्लेख इस प्रकार है।

(A) भौतिकवादी समाज एवं पाठ्यचर्या—: भौतिकवादी समाज नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास पर बल न देकर भौतिक सम्पन्नता प्राप्त करना चाहते अतः इसी दृष्टि से शिक्षा के उद्देश्य भी निर्मित किये जाते हैं।

Scanned with CamScanner